प्रिय भाईयों,

आप को हम क्रिसमस के अवसर पर धन्य कहते हैं । जैसे-जैसे नयाँ साल के करीब पहुँच रहे हैं वैसे-वैसे हम चुनौती से भरते जा रहे हैं और ध्यानपूर्वक प्रभु पर निर्भर हैं उसकी इच्छा स्पष्ट रुप में क्या है जानने के लिए । वातावरण में परिर्वतन हैं और परमेश्वर शिलोह में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन द्वारा लिए जा रहे हैं । यह मासिक समाचार पत्र आप के साथ हमारी वार्तालाप हैं एक बार फिर गत माह ईमेल जो हमें मिली हैं व्यक्तिगत रूप में जवाब देने से अधिक हैं । कृपाया ध्यान दिजीए हम हरेक ईमेल ध्यान से पढ़ते हैं आप के आवश्यकता प्रभु में प्रार्थना रखते हैं और कई बार ब्यवहारिक रूप में सहायता पहुँचाने में असमर्थ रह जाते हैं । यह सेवाकाई को प्रभु ने प्रार्थमिक रूप से सिखाने की सेवाकाई के रूप में खड़ा किया हैं, कलीसिया में प्रेरिताई की सेवाकाई पुन : स्थापित करने के लिए और परमेश्वर के वचन की 'गहराई के ज्ञान' संतो तक पहुँचाने के लिए, विशेष रुप से यह समय सेवाकाई में अगुवों के लिये ।

अनुग्रह और शान्ति,

पावल गेलिगैन, पास्टर ज़ीन मेनिंग, पास्टर जेनैट और शिलोह के प्रेरिताई झुण्ड ।

जागृति समाचार

रिभाईवल मिनिष्ट्रिज् आष्ट्रेलिया कि ओर से

पि० ओ० बांक्स 2718 **बी० सी० टूउम्बाँ क्यु**०4350 **आष्ट्रेलिया**

दूरभाष 61-7-46130633 ; ईमेल rma@revivalministries.org.au

वेबसाईट www.revivalministries.org.au

7* दिसम्बर 2005 ** दिसम्बर 2005 ** दिसम्बर 2005 **दिसम्बर 2005 **

"इसलिए हे भाईयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं ,कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ : यही तुम्हारी आत्मिक सेवा हैं । और इस संसार के सदृश न बनो ; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने (परिर्वतित और रूपांतरित Gr. SC. # 3339 'metamorphoo') ***से तुम्हारा चाल- चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो ।।*** **रोमियों** 12:1,2 । भाईयों यह रूपान्तरण हो रही हैं । अन्त समय के जागृति हमें तेजस्वी, निष्कलंक, पवित्र दुलहन कलिसिया बनने के लिए तैयार करेगी, जो यीशु के आने के समय वह अपने आपको प्रस्तुत करेगी, शुरू हो चुकी हैं । यह उसी के अनुग्रह का छुटकारा और अनुभव का देन है जो पुरी हो रही हैं । यह अनुग्रह हमें यीशु मसीह में दिया गया हैं, समय शुरु होने से पहले परन्तु हमारे अनुभव में अभी से पुरी हो रही हैं (2 तिमोथी 1:9-10) । जैसे कि हम जानते है, यीशु ने क्रुस के द्वारा और उसके बाद उसका स्वर्ग में प्रवेश होने के द्वारा छुटकारे के काम पुरे तौर से समाप्त किया । उसी के द्वारा हमें धर्मी ठहराया गया और हमें महिमा भी दी (**रोमियों** 8 :20) और यह महीमा में प्रवेश परमेश्वर आज रहस्य का दर्शन द्वारा ही सम्भव करता हैं (**कुलस्सियों** 1:27) और परमेश्वर के वचन का गहिरे ज्ञान द्वारा ***"जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया हैं ।"*** (1 **कुरिन्थियों** 2:7)।

"जिस से हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बने ।" **तीतुस** 3 :7 यही अनुग्रह के अनुसार हमें वरदान दिया गया जिससे हम शरीर में भविष्यवाणी, शिक्षा, सेवाकाई, उपदेश, अगुआपन, देने में और अनुग्रह में कार्य कर सके, **रोमियों** 12:6–8 । हम प्रत्येक को मसीह के वरदान के परिमाण अनुसार और पाँच प्रकार के वरदान के अनुसार अनुग्रह दिया गया हैं । ***"और उस ने कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया ।"*** **इफिसियों**

4 :8, 11 उसने सेवक को यें वरदानों को अनुग्रह में दिया कि संतों को सिद्ध बना सके (तैयार करना, शरीर के अंगों ठीक-ठाक करना जिससे वें अच्छे और पुरे तौर से कार्य कर सके) । जैसे-जैसे यें सेवाकाई के दान बढ़ने लगते है, देह छोड़ने और ग्रहण करने लगती है तब सारे देह गठन होने लगती हैं जब तब कि हम परिपक्व न हो जाए, **इफिसियों** 4:12–13

यही समय है संतों के लिए जानना और समझना कि एक ही देह है और परमेश्वर ने हम प्रत्येक को उस के देह मे एक-एक स्थान में नियुक्त किया हैं , 1 **कुरिन्थियों** 12:18, और परमेश्वर ने हमें उसके देह में अलग-अलग अंग बनाया हैं, अगुवाईपन के लिए अलग-अलग नियुक्त किया हैं अन्य दान बड़ने लगे और कलीसिया परमेश्वर के प्रेम में कार्य करने के लिए योग्य बन जाए, संसार को प्रेम-प्रर्दशन करते हुए, 1 **कुरिन्थियों** 13: 4–8 ।

जागृति शुरु हो चुकी हैं : बहुत सारे सेवक लगायत हरेक संत बड़ा अनुग्रह प्राप्त कर रहे हैं जो उन्हें लेपालकपन के सच्चाई में ले आती हैं, वह 'स्थान' जानते हुए जो परमेश्वर ने उसके बच्चों को दी हैं और अब उसके दास होने के लिए बढ़ा हुआ, परन्तु पुरे तौर से पुत्रों के नाई कार्य करते हैं, मीरास में चलते हुए । परमेश्वर ने हमारे लिए नियुक्त किया हैं ***"एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए, जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी हैं, जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए, जो आने वाले समय में प्रगट होने वाली है, की जाती हैं "*** 1 **पतरस** 1 : 3–5 । मीरास स्वर्ग मे आरक्षित हैं परन्तु अन्त के समय में पृथ्वी में ग्रहण करनी हैं । समय का अर्थ यहाँ पर 'केयरोस' है जिस का मतलब होता है समय का अनुग्रह जिस में परमेश्वर उसके लोगों के लिये विशेष कार्य कर रहा हैं ; 'केयरोस' उस बात को संकेत करती है जो विशेष कालक्रम के अनुसार हो रही हो, पतरस अब से लेकर प्रभु के आने तक के समय को संकेत करता हैं ।

और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया , कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों कि उसके उस अनुग्रह की महीमा की स्तुति हो , **इफिसियों** 1:5–6 । पहिले से ठहराया भी है कि **"उसके पुत्र के स्वरूप में हो" रोमियों** 8: 29 – यह होता है अंगिकार करने के द्वारा, जिससे हम पुत्र के स्थान में ठहराये जाए ; हम पुत्र के डीलडौल तक बड़ते जाए, परिपक्वता में बड़ने के लिए अनुग्रह प्राप्त हैं, पिता को अब व्यक्ति रुप में पहले से बड़कर जानते हैं, आत्मा के चलाए चलते हैं पुत्र के समान (**रोमियों** 8:14) । जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उन के उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे । (**इब्रानियों** 2 : 10)

कौन यह जागृति में प्रवेश कर सकता हैं ? कौन गोद लेने के द्वारा पुत्र बन सकता है? परमेश्वर के लोगों के सारे पीढ़ी जिसको उसने मिश्र से छुड़ा लाया, जिसको मरूभूमि की यात्रा द्वारा निकाल लाया हैं, ***"उकाब पक्षी के पंखों चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ"*** **निर्गमन** 19 :4 । उसने हमे पिन्तेकुस्त में पवित्र पर्वत में लाया, और हमारे ऊपर अपनी आत्मा उतारा, परन्तु अब वह चाहता कि हम मीरास के भूमि पर आए, अन्त में सिय्योन में उसके आगे आये और उसके आगे सर्वदा रहे ।

उसने हमारे साथ मित्रता की है जैसी मित्रता उसने मूसा और इस्राएल के संतानो से की थी । जब वे मरूभूमि पार करके कादेश में पहुँचे, वे सिद्ध लोंग नही थे ; वे एक मिश्रित झुण्ड थी- उनेके बच्चे उनके साथ थे । वे वही लोंग थे जिनके लिये हारून ने सोने का बछड़ा बनाया और यदी वे परमेश्वर पर विश्वास करते तो अवश्य समय पर निज़भूमि पर प्रवेश करते । ये उनकी अविश्वास थी जो उन्होंने बलवा की और वायदा के मीरास में प्रवेश करने के लिए इन्कार किया । परन्तु चालीस वर्षो के बाद उनके सन्तान (उनके बेटे) प्रवेश कर पायें । इसलिए आज यह परमेश्वर के लोगों के लिए हैं , यह विश्वास द्वारा ही मीरास में प्रवेश कर सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिये रखा है । सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है (**रोमियों** 10 :17), जैसे-जैसे हम पुत्रत्व के वचन सुनते है, लेपालकपन के विषय में सुनते हैं, अनुग्रह के खुलने के विषय में सुनते है जो हमें अपनी मीरास मे चलने को मदद मिलती हैं, वह विश्वास ही है जिससे हम प्रवेश करते हैं ।

यह **कुलुस्सियों** में पौलुस यह विषय रहस्य को संक्षेप करता है :**मसीह तुममें है, जो महीमा की आशा है ।** परमेश्वर अपने लोगों के द्वारा अपनी महीमा को प्रगट करने के लिए इस पृथ्वी पर अभिप्राय रखता है । पौलुस हमसे **इफिसियों** 3 :8–10 कहता

है यह उसी अनुग्रह के द्वारा वह कर सका ***"और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त है, ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर , जो स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए ।"*** कलीसिया के द्वारा ही परमेश्वर मसीह की जय इस पृथ्वी पर प्रगट करता है । कलीसिया के द्वारा ही परिपक्वता आई है, पवित्र आत्मा के द्वारा ही प्रेरित और भविष्यवक्ता बढ़ने लगते है जो रहस्य के ज्ञान को प्रगट करते हैं, कलीसिया के द्वारा ही विश्वास में दृढ़ रह सका सतावट के समयों में जब सब प्रकार की विरोध, सीधी क्लेश लागू किया गया । परमेश्वर वायदा करता है जो सारे अनुग्रह का परमेश्वर है, ***"तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा ।"*** 1 **पतरस** 5 :10

घर-घर में सेवाकाईयाँ

अब से कुछ सालों से प्रभु ने हमें **प्रत्येक घर में कलीसिया शुरु करने के लिए केन्द्रीभूत कीया है** । **लूका** 10 अध्याय में 70 चेंलों को निर्देश देकर भेजा था, जिन्हें एक घर की तलाश थी की जो उन्हें ग्रहण करे और उसी घर में बिमारों को चंगा करे और सुसमाचार को प्रचार करे । **प्रेरितों के पुस्तक** में और **कई पत्रियों में** कलीसिया घर-घर में ईकट्ठा होनी की जिक्र हम पाते हैं । वास्तव में **घर ही मुख्य और एक ही स्थान हुआ करता था जहाँ कलीसिया ईकट्ठा हुआ करती थी** । नयाँ नियम के लिखने तक सर्मपित कलीसिया-भवन का जिक्र नहीं पाई जाती हैं । आज आधुनिक युग में हमें समझना कठिन होगा कि किस प्रकार कलीसिया संचालित हुई होगी क्योंकि आज़ की कलीसिया की सेवाकाईयों की ढ़ाँचा बिलकुल अलग तौर का हैं । कैसे भी हो घ**र में कलीसिया का पुनःस्थापित होने का काम शुरू हो चुकी हैं ।**

गत गुरूवार से लेकर रविवार तक एक पास्टर जो एक छोटी सी शहरी गाँव में रहते है, हमारी एक दल को कुल सात स्थानों में लेकर गये (एक नगर, चार शहर और खेत में बना एक मक़ान में) । सभा कम से कम एक व्यक्ति से लेकर अधिक कहे तो 15 व्यक्ति थे । जैसे भी हो हरेक स्थान में प्रभु मे अपनी वचन को विशेष ढ़ंग से अगुवाई की और वहाँ दर्शन और समझने के लिए अभिषेक था । हमें एक बार फिर आश्चर्य हो रही थी **कि हम घर-घर जा रहे थे, वचन बाँटते हुए और परमेश्वर के लोगों के आवश्यकता पुरी करते हुए** ।

जागृति के अलग ढ़ंग के काम हम देख रहे हैं, न कि इस समय अधिक आत्माए बचते हए, परन्तु **जीवन-परिवर्तन का अनुभव** करते हुये, जिसके विषय में हम संदेश-पत्र में केवल परिचय दे रहे हैं । परमेश्वर हमें व्यक्तिगत रूप में और छोटी-छोटी समुह को सेवाकाई पहुँचाने में मदद कर रहा है, जो **'कलीसिया बनने के' लिए सिख रही हैं**, जो अब बनावट में अथवा धर्मतंत्रीय में अथवा सेवाकाई के मानव द्वारा बनाए गए प्रथा को नही मानते, परन्तु जो पवित्र आत्मा के अगुवाईपन को अनुभव कर रहे हैं, जो शिष्य बनने का उत्तरदायित्व को समझ रहे हैं, वचन के ज्ञान में बढ़ने के लिये । **यह सब बातों में, परमेश्वर एक झुण्ड़ को बहुतों के लिये अर्न्तप्रवाह बना रहा है ।**

गत दो सप्ताहान्तों में, शिलोह से कई दल घरों में सेवाकाई देने के लिए गई । हमारे दो पास्टर तामवोर्थ और दोरीगो के घर कलीसिया को देखने के लिए गए और दुसरे शहर में व्यक्तिगत रुप से एक संत से मिले -वे पाँच दिनों के लिए दूर थे । एक परिवार एक बहिन को लेते हुए 200 कि0 मि0 गाड़ी से तय की, और विच्छेद क्षेत्र में सेवाकाई की । दुसरे पास्टर के परिवार वोनदाइ में एक घर कलीसिया में सेवाकाई की और रविवार को मेरिनगदान में । साथ ही साथ एक पास्टर के साथ जवानों के एक दल कीलार्नी में एक जवानों के लिए और बच्चों के लिए केम्प संचालन की । यह उसी दल के समान हैं जिन्होंने छः स्थानों मे सेवाकाई पहुँचाई ।

परमेश्वर शिलोह से जाने वाली प्रेरिताई सेवाकाई के लिए लगातार द्वार खोलते रहे ।